विराट व्यक्तित्व के धनी : युवाचार्य महाश्रमण

—डॉ. सोहनराज तातेड़

मोहन से महाश्रमण की यात्रा

जब-जब मानवता पर संकट के बादल मंडराते हैं, तब-तब महापुरुष उस संकट से मुनष्य जाति को उबारने के लिए इस धरा पर जन्म लेते हैं। वि.सं. 2019 का समय जब भारत देश में अनैतिकता असंवेदनशीलता, भ्रष्टाचार, अप्रामाणिकता, क्रूरता, स्वार्थपरता का बोलबाला था, भारत देश के राजस्थान प्रांत के चुरु जिले के सरदारशहर कस्बे में वि. सं. 2019 वैशाख शुक्ला नवमी (3 मई 1962) को माता नेमांदेवी एवं पिता झूमरमलजी दुगड़ के घर एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। बच्चे का नाम मोहन दिया गया। बचपन से ही बालक मोहन पर **''होनहार बिखान के होत चिकते पात''** युक्ति चरितार्थ होने लगी। बचपन से ही बालक मोहन कुशाग्र बुद्धि, धीर-गंभीर, सौन्य स्वभाव का धनी था। कौन जानता था कि यह बालक भावी में तेरापंथ का भाग्य विधाता होगा। आप आठ भाई बहिनों में सातवें स्थान पर हैं। जब आप सात वर्ष के थे तभी आप पर एकाएक पिता का साया उठ गया। लेकिन अपनी माँ नेमांदेवी ने इस कमी को पूरा किया। बाल्यकाल से ही आपकी मां ने आपको सद्संस्कार दिए। उसका परिणाम यह हुआ कि आप में वैराग्य का बीज अंकुरित होने लगा। आप अपने वैराग्य को पुष्ट करने की तैयारी में लग गये। भीतर ही भीतर आप साधु जीवनचर्या की तैयारी करने लगे। बचपन से ही इनकी संकल्प शक्ति बहुत दृढ़ थी। एक दिन सुअवसर देखकर आपने दीक्षा लेने की अपनी भावना माँ के सामने रखी। माँ ने मोहन को समझाया, ''दीक्षा लेना बच्चों का खेल नहीं है, यह कंटाकार्कीण पथ है।'' माँ ने मोहन को साधु जीवन की चर्या में पूर्ण परिपक्व होने की सलाह दी। बालक मोहन ने अपने आपको तोलना प्रारंभ किया। अपने अंतस को अनासक्त भावों से भावित करने लगे। अब बालक मोहन के मन में दीक्षा लेने की भावना उत्तरोत्तर बलवती होने लगी। समय आने पर प्रव्रज्या ग्रहण करने की अपनी उत्कृष्ट भावना गुरुदेव आचार्य तुलसी के समक्ष रखी। उस समय आचार्य तुलसी भगवान महावीर की पच्चीस सौंवीं निवार्ण शताब्दी पर दिल्ली में प्रवासित थे।

आचार्य तुलसी ने बालक मोहन के वैराग्य एवं अनासक्ति की कड़ी परीक्षा लेनी प्रारंभ की। बालक मोहन ने अपने आन्तरिक जगत् को बहुत मजबूत बना लिया था। आचार्य तुलसी की हर परीक्षा में आप खरे उतरे। आचार्य तुलसी ने आपको सब प्रकार से दीक्षा के योग्य समझकर और परीक्षण कर सरदारशहर में ही मुनि सुमेरमलजी (लाडनूँ) को दीक्षा देने की कृपा दृष्टि प्रदान की। आचार्यवर की अनुमति से आपकी दीक्षा मुनि सुमेरमलजी (लाडनूँ) के कर कमलों द्वारा वि. सं. 2031 वैशाल शुक्ला चतुदर्शी (5 मई 1974) रविवार के दिन सम्पन्न हुई। आपका नया सन्यासी जीवन मुनि मुदित कुमार के नाम से प्रारंभ हुआ। केश और वेश के साथ आपका क्लेश बदल चुका था। दीक्षित होते ही आपमें रूपांतरण की प्रक्रिया चालू हुई। धीरे-धीरे सब कुछ बदलने लगा। आपने मौन, एकांतवास, स्वाध्याय, ध्यान को अपना लक्ष्य बनाया। आप आगमों का गहन अध्ययन करने लगे। जैन वांङ्गमय को हृदयंगम करने लगे। आपने **''ज्ञान कंठा, दाम अंटा''** युक्ति का गहन मनन प्रारंभ कर ज्ञान को कण्ठस्थ करने लगे तथा पुन:-पुन: चितारना करते रहते। ज्ञान और आचार का आप में संगम होने लगा। **''णाणस्स सारमायारो''**-ज्ञान का सार

आचार है, भगवान महावीर की वाणी को आप चरितार्थ करने लगे। अध्ययनकाल में आपने हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत और अंग्रेजी भाषाओं का भी गहन अध्ययन चालू किया। उस बीच आपने कभी गुरुकुलवास किया तो कभी पृथक् रहे, पर निरंतर गुरुकुलवास रहने का अवसर वि.सं. 2040 बीदासर मर्यादा महोत्सव के पश्चात् प्राप्त हुआ।

आचार्य तुलसी मानव हीरों के पारखी थे। वे एक कुशल शिल्पी थे। वे उच्चकोटि के कलाकार थे। आचार्य तुलसी ने अनेक अनघड़ पत्थर रूपी मानवों को घड़-घड़ कर कुशल साधु-साध्वी रूपी मूर्ति का आकार दिया। आचार्य तुलसी की पैनी नजर मुदित मुनि पर पड़ी। पहली नजर में ही उस हीरे को जौहरी आचार्य तुलसी ने परख लिया। एक कुशल शिल्पी के रूप में मुनि मुदित का निर्माण प्रारंभ कर दिया। उसी का परिणाम था कि आपके साथ विकास के नये-नये आयाम जुड़े। वि.सं. 2042 माघ शुक्ला सप्तमी (16 फरवरी 1986) मर्यादा महोत्सव, उदयपुर में आचार्य तुलसी ने आपको युवाचार्य महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी के रूप में रखा। युवाचार्य महाप्रज्ञ उच्चकोटि के चिंतक, विद्वान एवं प्रज्ञावान साधक हैं। आप आगम मर्मज्ञ एवं प्राकृत-संस्कृत-के प्रकाण्ड पंडित है। आपके अंतरंग सहयोगी के रूप में रहकर मुनि मुदितजी ने आगमों एवं प्राकृत संस्कृत भाषाओं का गहन ज्ञान प्राप्त किया। युवाचार्य महाप्रज्ञ अतीन्द्रय ज्ञानी हैं। उनका तीसरा नेत्र खुल चुका है। उनकी प्रज्ञा जागृत है। ऐसे महामनीषी के अंतरंग सहयोगी के रूप में कार्य कर मुनि मुदित कृर्ताथ हुए, धन्य हुए। धीरे-धीरे युवाचार्य महाप्रज्ञ के गुण मुनि मुदित में संक्रान्त होने लगे।

मुदित मुनि विकास यात्रा के सोपान क्रमश: तय करते रहे। आपके शुभ नाम कर्म का उदय है। आचार्य तुलसी ने वि.सं. 2043 वैशाख शुक्ला चतुर्थी (14 मई 1986) अक्षय तृतीय की अगली संध्या ब्यावर में आपकी साझपति के रूप में नियुक्त की। मुनि मुदित स्वाध्याय, चीतारना, ज्ञान को कंठस्थ करने में तलीन रहते हैं। आपने अपने पुरूषार्थ से कई क्षमताओं का अर्जन किया। आपकी योग्यता का अंकन कर आचार्य तुलसी ने वि.सं. 2046 भादव शुक्ला नवमी (9 सितम्बर 1989) के अवसर पर योगक्षेम वर्ष में आपको गरिमापूर्ण दायित्व वाले महाश्रमण पद पर नियुक्त किया। उस समय तेरापंथ धर्म संघ में इस पद की सर्वथा नई सर्जना थी। वरीयता के क्रम में आचार्य, युवाचार्य के बाद का यह पद है। आप पर जिम्मेदारियां बढ़ती गई। लेकिन इन जिम्मेदारियों को वहन करने के लिए आपके कंधे बहुत मजबूत है। धर्म संघ को नई दिशा देने तथा धर्मसंघ के अनुयायियों से सम्पर्क साधने हेतु आपने स्वतंत्र यात्राएँ प्रारंभ की। उनमें से चार यात्राओं की निष्पति महत्वपूर्ण रही–

(1) प्रथम यात्रा – यह यात्रा फरवरी मार्च सन् 1990 लाडनूँ से प्रारंभ कर श्रीडूंगरगढ़ होते हुए सरदारशहर के छोटी खाटू में सम्पन्न हुई। तेरापंथ समाज को नजदीक से देखने का आपको एक अवसर मिला। तेरापंथ धर्मसंघ की क्षमताओं का आपने आकलन किया।

(2) दूसरी यात्रा – दूसरी स्वतंत्र यात्रा नवम्बर-दिसम्बर 1990 पाली चातुर्मास के बाद सिवांची-मालाणी क्षेत्र की हुई। वहां से यह यात्रा रानी स्टेशन होती हुई 10 जनवरी 1991 सोजत रोड़ में सम्पन्न हुई। इस यात्रा की परिसम्मपन्नता पर आचार्य तुलसी ने आपको कड़ी कसौटी पर कसते हुए कहा–यदि तुम्हारे में कोई सुविधावाद की गलती निकाले या सुविधावाद की कोई गलती मेरे ध्यान में आये तो तुम्हें खड़े-खड़े तीन घंटा ध्यान करना होगा। आपने गुरु की कड़ी कसौटी को सहजता से स्वीकार किया। यह गुरू के प्रति समर्पण का अद्वितीय उदाहरण था। मानो गुरु उन्हें सर्वगुण सम्पन्न बनाना चाहते थे। गुरु और शिष्य के बीच एक तादात्मय स्थापित हो गया। वे दोनों द्वैत से अद्वैत बन गये।

(3) तीसरी यात्रा – 25 नवम्बर 1994 से 4 जनवरी 1995 दिल्ली चातुर्मास के बाद उपनगरों की हुई। उस यात्रा में कई बुद्धिजीवी लोग आपके सम्पर्क में आये। कई विख्यात जन प्रतिनिधियों से सम्पर्क स्थापित हुआ, जिससे जैन धर्म की बहुत अच्छी प्रभावना हुई।

(4) चौथी यात्रा – 17 फरवरी 2000 को तारानगर से गंगानगर जिले को स्पर्श करती हुई सरदारशहर, डूंगरगढ़ होते हुए बीदासर में 11 जून 2000 को सम्पन्न हुई। इस यात्रा का नाम दिया गया – अणुव्रत प्रेक्षा यात्रा। महाश्रमणजी ने पूरी यात्रा में अणुव्रत के सिद्धान्तों की व्याख्या की तथा लोगों को अणुव्रती बनने की प्रेरणा दी। छोटे-छोटे व्रतों के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में नैतिकता ला सकता है। नैतिक व्यक्ति शांति का जीवन जीता है तथा समाज व राष्ट्र की बहुत बड़ी सेवा करता है। अणुव्रत एक आचार संहिता है जिसे मानव मात्र आसानी से पालन कर सकता है। हर वर्ग के इंसान के लिए अणुव्रत संहिता उपलब्ध है। अणुव्रत व्यक्ति को **''गुड मैन''** बनाता है। प्रेक्षाध्यान का साधक मन और बुद्धि से परे अतीन्द्रिय चेतना, प्रज्ञा के जगत् में जा सकता है जहां विचारों एवं शब्दों की पहुंच नहीं है। इस यात्रा में महासमणजी ने प्रेक्षाध्यान के शिविर लगाकर लोगों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग, इसकी आध्यात्मिक, वैज्ञानिक पृष्ठभूमि से अवगत करवाया। मनुष्य के दैन्दिनी जीवन की समस्याओं का स्थायी समाधान प्रेक्षाध्यान प्रयोग पद्धति है। प्रेक्षाध्यान से शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। इस दृष्टि से यह यात्रा बहुत प्रभावी रही।

महाश्रमण से युवाचार्य महाश्रमण की यात्रा

आचार्य तुलसी 60 वर्ष तक तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य रहे। उनका आचार्य काल एक स्वर्णिम युग था। आप युग दृष्टा, युग सृष्टा एवं युग निर्माता थे। आप में युग को अपने प्रवाह के साथ मोड़ने की अद्‌भुत कला थी। आचार्य तुलसी ने जो भी सपना लिया उसको अपने पुरूषार्थ व प्रबल इच्छा शक्ति से साकार किया। आपके सामने कई विरोध, अवरोध व बाधाओं के पहाड़ आये लेकिन आपके दृढ़ संकल्प के सामने सभी ने घुटने टेक दिए। आपका व्यक्तित्व बहुआयामी था। मानवता के कल्याण के लिए आपने प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत, जीवन विज्ञान एवं अहिंसा-प्रशिक्षण आयामों को जन्म दिया। युवाचार्य महाप्रज्ञ (वर्तमान आचार्य महाप्रज्ञ), युवाचार्य महाश्रमण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा आपकी अनुपम कृतियां हैं। नया मोड़, समण श्रेणी, पा.शि.सं. आपके क्रांतिकारी कदम हैं। महाश्रमणजी के शिल्पकार गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का वि.सं. 2054 आसाढ़ वदी 3 (23 जून 1997) को तेरापंथ भवन, गंगाशहर (बीकानेर) में अचानक समाधिमरण हो गया। तेरापंथ धर्म संघ से गुरू का साया उठ गया। मानवता का मसीहा हमसे बिछुड़ गया। धर्मसंघ ने कलेजा कठोर कर विधि के इस विधान को झेला। इसके बाद आचार्य महाप्रज्ञ ने आकस्मिक युवाचार्य मनोनयन की घोषणा कर दी। उस घोषणा के अनुसार वि.सं. 2054 भाद्रव शुक्ला 12 (14 सितम्बर 1997) को गंगाशहर कस्बे में पचास हजार की विशाल जमेदिनी के समक्ष उत्तराधिकार पत्र सौंपते हुए आपने महाश्रमणजी को युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। तभी से आप **''युवाचार्य महाश्रमण''** के नाम से जाने जाने लगे। उस नयनाभिराम दृष्य को देखकर हजारों-हजारों आंखें तृप्त हो गई और मन प्रसन्नता से भर गया। तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली परम्परा में आप आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा नियुक्त होने वाले आठवें युवाचार्य हैं। उस समय आपकी अवस्था 35 वर्ष की थी।

गण के मालाकार अपने गण मन्दिर में किस व्यक्ति को प्रतिष्ठित करते हैं, यह उनका निजि अधिकार है, पर गणपालक के अन्त:करण को जीतने वाले और उनके हाथों सर्वोच्च पद तक पहुँचने वाले विरले व्यक्ति ही होते हैं। उस विरलतम व्यक्तियों में एक विरल व्यक्ति का नाम है – युवाचार्य महाश्रमण। आपकी

सहजता, सरलता, सौम्यता, विनम्रता, पापभीरुता, मितभाषण, मृदुभाषण गुणों के कारण आप बालक मोहन से, मुनि मुदित, मुनि मुदित से महाश्रमण एवं महाश्रमण से युवाचार्य महाश्रमण पद तक पहुँचने में सफल हुए।

युवाचार्य महाश्रमण – व्यक्तित्व और कर्तृत्व

तेरापंथ समाज भाग्यशाली है कि हमें भगवान महावीर का शासन मिला। सुविख्यात तेरापंथ धर्मसंघ मिला एवं आचार्य महाप्रज्ञ की अनुशासना मिली। हमारा भूत गौरवशाली था, वर्तमान भी गौरवशाली है, तथा भविष्य भी युवाचार्य महाश्रमण के हाथों गौरवशाली होगा। आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ ने एक हीरा तरास कर तेरापंथ के ताज पर जड़ दिया। वह हीरा है – युवाचार्य महाश्रमण। जैन दर्शन भारतीय संस्कृति का सर्वांगीण दर्शन है। यहां व्यक्ति पूजा मान्य नहीं, गुणों की पूजा होती है। युवाचार्यश्री महाश्रमण पूजनीय है। वे गुणों की खान हैं। समता, अनुशासन एवं गुरु-दृष्टि की आराधना उनके रोम-रोम में बसी हुई है। आप उच्च कोटि के साधक एवं निर्मल ज्ञान के धनी हैं। आपके कषाय उपशांत है। आप हर कार्य एकाग्र होकर करते हैं जिससे भावक्रिया की साधना स्वत: फलित हो जाती है। मृदुभाषी, मितभाषी, चिंतनशील युवाचार्यश्री महाश्रमण विलक्षण प्रतिभा के धनी है। आपको आचार्य तुलसी का वरद् हस्त मिला तथा आचार्य महाप्रज्ञ की छत्रछाया मिल रही है। दो आचार्यों को परिपार्श्व में बैठकर आपने सुसंस्कारों को संजोया। आप तीव्र मेघा के धनी है। आपको युवाचार्य के रूप में पाकर तेरापंथ धर्मसंघ 21वीं शताब्दी तक निश्चिन्त है।

आप एक कुशल प्रशासक है। आपका अनुशासन एक नारियल की तरह है। अनुशासन में आप अत्यन्त कठोर हैं, लेकिन भीतर में आपके मैत्री एवं करूणा का सागर लहलहाता है। आपकी मूर्त मोहनीय है। जी करता है कि मूर्त को निहारते रहें। आपकी चाल-ठाल में आचार्य तुलसी की ललक महसूस होती है। कई बार आप धर्म ध्वज कंधे पर रखकर गमन योग करते हैं तो पीछे चलने वाले को महसूस होता है कि साक्षात् आचार्य तुलसी पाद-विहार कर रहे हैं। आप में आचार्य तुलसी का प्रशासन एवं आचार्य महाप्रज्ञ की प्रज्ञा दोनों का समन्वय है। आप साधना में बहुत सतावधानी है। साधना में थोड़ा बहुत भी प्रमाद या स्खलना न तो आप करते हैं न किसी साधु सध्वी की स्खलना आप सहन करते हैं आपकी पापभीरुता उच्च कोटि की है। आपने भगवान महावीर की वाणी को चरितार्थ किया है।

जयं चरे जयं चिट्ठे जयं मासे, जयं सए।

जयं भुजंतो भासंती, पाव कम्मं न बंधई॥

जयणा पूर्वक चलने पर, जयणापूर्वक रखने पर, जयणापूर्वक बैठने पर, जयणापूर्वक सोने पर, जयणापूर्वक भोजन करने पर, जयणापूर्वक बोलने पर, पाप कर्म का बंध नहीं होता (दशवैकालिक 4/8 गाथा)

युवाचार्य महाश्रमण का मानवजाति को योगदान

युवाचार्यश्री महाश्रमण मानवता के मसीहा है। आपके दिमाग में मानवता के कल्याण की योजनाएं उभरती रहती हैं। मानव मात्र के लिए आपके मन में करूणा के भाव हैं। जैन वांङ्मय के अनेक सूत्र आपके हृदयंगम किए हुए है। आप आगम मर्मज्ञ हैं, आगम मनीषी हैं। अपनी प्रवचन शैली जनोपयोगी है। आपका प्रवचन सरस एवं मधुर होता है। आपकी भाषा सर्वग्राह्य है। आपके वचनों मे गागर में सागर भरा रहता है। प्रवचन में प्राय: आपका उपदेश रहता है:-**''आपणा सच्च मे सेजा, मेत्तिं भुए सु कप्पये''** स्वयं सत्य

खोजो, सबके साथ मैत्री करो। भाव क्रिया, प्रतिक्रिया, विरति, मैत्री, मितभाषण, मिताहार आपके जीवन के अंग है। आप स्वयं भावक्रिया का जीवन जीते हैं तथा लोगों को प्रेरित करते हैं। भावक्रिया में चित्त, जो कार्य किया जाता है, उसी में ही संलग्न रहता है। भावक्रिया करने वाला व्यक्ति हमेशा वर्तमान में जीता है। भावक्रिया से कषाय उपशांत रहते हैं। मन की एकाग्रता सधती है। युवाचार्य महाश्रमण का मानव जाति को उपदेश है कि अगर व्यक्ति भावक्रिया का जीवन जीए तो युगानुकूल कभी समस्याओं का समाधान पा लेता है।

आचार्य भिक्षु की वाणी **बुद्धि वाहि सराहिए जो सेवे जिण धर्म, वा बुद्धि किण काम री जो पड़िया वांधे कर्म।** इस वाणी को आपने चरितार्थ किया तथा लोगों को उपदेश दिया कि व्यक्ति को चरित्रनिष्ट होना चाहिए। आपके प्रवचनों में ईमानदारी व नैतिकता पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है। आपने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ 1 दिसम्बर 2001 से सुजानगढ़ कस्बे से अहिंसा यात्रा प्रारंभ की। अहिंसा यात्रा के दो मुख्य उद्देश्य है–

(1) मनुष्य में अहिंसक चेतना का जागरण हो।

(2) मनुष्य में नैतिक मूल्यों का विकास हो।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ और आपने इस अहिंसा यात्रा के माध्यम से राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा व दिल्ली प्रांत के लोगों को अहिंसक जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा दी। इस यात्रा के माध्यम से आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं आपने हिंसा के कारणों की खोज की। आपने पाया कि हिंसा पनपने के मुख्य कारण-अभाव (रोटी), अन्याय, स्वार्थ व अज्ञानता हैं। समय-समय पर आपने केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के उच्च अधिकारियों को प्रेरणा दी कि मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर रोजगार पैदा कर अभाव की स्थिति को समाप्त किया जाए। न्यायपालिका इतनी सक्षम हो कि भारत के किसी भी नागरिक के साथ अन्याय न हो, किसी का शोषण न हो। व्यक्ति के स्वार्थ एवं अज्ञानता को दूर करने के लिए आपने जगह-जगह शिविर लगाऐ जिसमें प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अणुव्रत, अहिंसा प्रशिक्षण के प्रयोग एवं प्रशिक्षण दिए। आपकी मान्यता है कि प्रयोग एवं प्रशिक्षण बिना व्यक्ति में रुपांतरण नहीं हो सकता। अच्छाई को व्यक्ति के अवचेतन मन तक ले जाना होगा। अवचेतन मन के स्पर्श होने के बाद विचार हृदयंगम हो जाता है तथा व्यक्ति का रुपांतरण प्रारंभ हो जाता है। प्रेक्षाध्यान के शिविरों के माध्यम से लाखों लोगों को अपनी आदतें तथा स्वभाव बदलने के नुस्खे बताए गये।

व्यक्ति में नैतिक आचरण लाने के लिए अणुव्रतों का सहारा लिया गया। आप अणुव्रत दर्शन के प्रखर प्रवक्ता है। अहिंसा यात्रा के दौरान लाखों लोगों को अणुव्रती बनाया। आपने जनमानस को उपदेश दिया कि नैतिकता और धर्म एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। नैतिक व्यक्ति कभी अधर्मी नहीं होगा, धर्मी व्यक्ति कभी अनैतिक नहीं हो सकता है। आप अहिंसा की सूक्ष्म व्याख्या के प्रबल व्याखाकार है। भगवान महावीर तथा उनके द्वारा दिया गया जैन दर्शन उनका आदर्श है। आप प्रतिदिन संस्कार चैनल के माध्यम से आगमवाणी (जैन वांङ्गमय सूत्रों) का प्रचार प्रसार करते रहते हैं। प्रतिदिन जैन वाङ्मय का एक-एक सूत्र लेकर उसकी सांगोपांग व्याख्या कर लोगों की धारणा (Brain Washing) का रुपांतरण करते हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ सूत्र इस प्रकार हैं–

- **खणं जाणाहि पंडिए –** पंडित वह होता है जो क्षण को जानता है।
- **संपिक्खए अप्पगमप्पएणं –** आत्मा से आत्मा को देखो।

H **णाणस्स सारमायारो –** ज्ञान का सार आचार है।

H **रागो य दोसो वि य कम्म बीयं –** राग और द्वेष, ये दोनों कर्म के बीज है।

H **एका मणुस्स जाई –** मनुष्य जाति एक है।

H **विद्या ददाति विनयम् –** विद्या से विनय प्राप्त होती है।

H **समया धम्म मुदाहरे मुणि –** समता ही धर्म है।

H **धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई –** धर्म शुद्ध चित्त में ठहरता है।

H **या विद्याविमुक्तये –** विद्या वही जो मुक्ति की ओर ले जाये।

H **अप्पा सो परम अप्पा –** आत्मा ही परमात्मा है।

H **उट्ठिए णो पमायए –** उठ गये हो अब प्रमाद मत करो।

निष्कर्ष की भाषा में कहा जा सकता है कि आपको युवाचार्य के रूप में पाकर तेरापंथ धर्मसंघ 21वीं शताब्दी तक निश्चिंत है। आपको पाकर तेरापंथ का भविष्य अत्यन्त गौरवशाली है। आपका आभामंडल अत्यन्त पवित्र है। आपकी सन्निधि में आने वाला हर व्यक्ति आपकी साधना व विद्वता से प्रभावित होकर जाता है। आप भैक्षव शासन के चार स्तम्भ – अनुशासन, मर्यादा, व्यवस्था एवं संविभाग के प्रति सर्वात्मना समर्पित है। इसी कारण तेरापंथ चतुर्विद् धर्मसंघ आपकी आज्ञा को सर्वोपरि मानता है। आप आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति पूर्ण समर्पित है। ऐसा लगता है कि आप दोनों शरीर अलग-अलग हैं लेकिन आत्मा एक ही है। आप शतायु हों, दीर्घायु हों तथा लम्बे समय तक तेरापंथ धर्म संघ को देशना प्रदान करते रहें। आपके निर्मल आचार, ज्ञान एवं समता को शत्-शत् नमन्।

सलाहकार, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय,

लाडनूँ (राज.)